

भारत में मुद्रास्फीति की नाप: मुद्दे और परिप्रेक्ष्य * दीपक मोहंती

“मैंने कई बार कहा है कि मुद्रास्फीति एक भयावह जानवर है”

- रिचर्ड फिशर

मैं भारतीय राष्ट्रीय आय और धन अनुसंधान संघ (आइएआरएनआइडब्ल्यू) द्वारा भारत में मुद्रास्फीति की नाप जैसे महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने का अवसर देने के लिए धन्यवाद देता हूँ जो इस वर्ष के सम्मेलन का महत्वपूर्ण विषय है। यह चर्चा सही समय पर हो रही है क्योंकि अब हम थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआइ) की नई श्रृंखला में प्रवेश करेंगे जिसमें पण्य समूह के प्रतिनिधि और व्यापक आधारित उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआइ) के लिए प्रस्ताव होंगे। इसके अलावा, अब उपभोक्ता मूल्यों दोहरे अंक में हैं और थोक मूल्य बढ़ रहे हैं जिससे भारत में मुद्रास्फीति पर काफी चर्चा है।

2. अपने आज के भाषण में, मैं मुद्रास्फीति की विभिन्न प्राथमिक नापों की संक्षेप में समीक्षा करूंगा जिसमें डब्ल्यूपीआइ और सीपीआइ के बीच अंतर का विशेष संदर्भ होगा। मैं मुद्रास्फीति की विविध गौण (व्युत्पन्न) नापों, विशेष रूप से कोर मुद्रास्फीति पर फोकस करूंगा और आगे के रास्ते पर कुछ विचारों के साथ चर्चा का अंत करूंगा।

3. मुद्रास्फीति क्या है? हम मुद्रास्फीति की चिंता इतनी ज्यादा क्यों करते हैं? मुद्रास्फीति मूल्यों के समग्र स्तर में निरंतर वृद्धि है। मूल्य स्थिरता मौद्रिक नीति का एक प्रमुख उद्देश्य है, इसलिए केंद्रीय बैंक मुद्रास्फीति के संबंध में इतने चिंतित रहते हैं। विशिष्ट माल या सेवाओं की कीमतें दूसरों की मूल्यों की तुलना ऊपर या नीचे जा सकती हैं जो उत्पादकता या मांग और आपूर्ति की स्थिति में बदलाव को दर्शाती हैं। लेकिन जब समग्र मूल्य स्तर बढ़ जाता है, यह आय की क्रय शक्ति का हास करता है, जीवन-लागत बढ़ जाती है और बचत का वास्तविक मूल्य कम करती है। बचतकर्ता, निवेशक और वित्तीय मध्यस्थ मुद्रास्फीति और

* विकास अध्ययन केंद्र (सीडीएस), तिरुवनंतपुरम में 9 जनवरी 2010 को भारतीय राष्ट्रीय आय और धन अनुसंधान संघ (आइएआरएनआइडब्ल्यू) सम्मेलन में श्री दीपक मोहंती, कार्यपालक निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा दिया गया भाषण। डा. अभिमान दास द्वारा की गई सहायता के लिए हम उनके आभारी हैं।

ब्याज दर के बीच निकट संबंध मानते हैं। मुद्रास्फीति का स्तर भी एक उदार व्यापार और बाजार से निर्धारित विनिमय दर व्यवस्था में घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता को बनाए रखने के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। अधिक महत्वपूर्ण रूप से, गरीब लोग मुद्रास्फीति के संदर्भ में सर्वाधिक कमजोर होते हैं क्योंकि मुद्रास्फीति के खिलाफ बचाव का कोई भी कारगर उपाय उनके पास नहीं होता। जैसा कि कीन्स ने कहा है, 'मुद्रास्फीति कराधान का वह रूप है जिससे बचना लोगों के लिए मुश्किल होता है'। इस प्रकार, मुद्रास्फीति का मामला और इसकी नाप भारत में हमेशा ध्यान खींचती रही है।

I. मुद्रास्फीति की नाप: संकल्पनात्मक मुद्दे

4. भारत में मूल्यों के आँकड़ों के संग्रहण और प्रसार की समृद्ध और पुरानी परंपरा है जब 1861 में भारतीय मूल्यों का सूचकांक जारी किया गया था। वर्तमान में, मुद्रास्फीति की पाँच विभिन्न प्राथमिक नाप हैं- थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआइ) और उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआइ) की चार नाप। इसके अलावा, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) अपस्फीति और राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी (एनएएस) से निजी अंतिम उपभोग व्यय (पीएफसीई) अपस्फीति अर्थव्यवस्था-वार मुद्रास्फीति का स्पष्ट अनुमान प्रदान करती है। डब्ल्यूपीआइ को उसकी उच्च फ्रीक्वेंसी¹ पर उपलब्धता के कारण हेडलाइन मुद्रास्फीति नाप माना जाता है, हाल ही तक, राष्ट्रीय कवरेज और विच्छिन्न आंकड़े जो मुद्रास्फीति के बेहतर विश्लेषण की सुविधा उपलब्धता कराते हैं।

¹ डब्ल्यूपीआइ 24 अक्टूबर 2009 तक दो सप्ताह के अंतराल के साथ साप्ताहिक आधार पर उपलब्ध था। अब दो उपसमूहों - प्राथमिक वस्तुएं (डब्ल्यूपीआइ में भारांक: 22.03 प्रतिशत) और ईंधन और बिजली, प्रकाश और लुब्रिकेंट (डब्ल्यूपीआइ में भारांक: 14.23 प्रतिशत) एक पखवाड़े के अंतराल के साथ साप्ताहिक आधार पर उपलब्ध हैं। समग्र डब्ल्यूपीआइ सूचकांक पखवाड़े के अंतराल के साथ मासिक आधार पर उपलब्ध है।

5. हालांकि डब्ल्यूपीआइ सेवाओं के मूल्य कवर नहीं करती, सीपीआइ से अपेक्षित है कि वह खुदरा मूल्यों के आधार पर उपभोक्ताओं के सजातीय समूह की जीवन स्थिति लागत प्रतिबिंबित करेगी। सीपीआइ की चार नापों में, औद्योगिक श्रमिकों (आइडब्ल्यू) की सीपीआइ का कवरेज दूसरी सीपीआइ - कृषि श्रमिक (एएल), ग्रामीण श्रमिक (आरएल) और शहरी गैर-श्रमिक कर्मचारियों (यूएनएमई) की तुलना में अधिक होता है। संगठित क्षेत्र में, सीपीआइ-आईडब्ल्यू को जीवन स्तर लागत सूचकांक के रूप में प्रयोग में लाया जाता।

6. दूसरी ओर, जीडीपी अपस्फीति मुद्रास्फीति की व्यापक नाप है, जो स्थिर मूल्यों के प्रति मौजूदा मूल्यों पर जीडीपी के अनुपात के रूप राष्ट्रीय खातों के आंकड़ों से प्राप्त है। हालांकि यह सेवाओं सहित आर्थिक गतिविधियों को पूर्णतः कवर करता है, 1996 से यह दो महीने के अंतराल के साथ त्रैमासिक आधार पर उपलब्ध है। इसके अलावा, वास्तविक मूल्य अनुमान प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय आय समुच्चय में नाममात्र के मूल्य कम करने के लिए बड़े पैमाने पर डब्ल्यूपीआइ का उपयोग किया जाता है।

7. हर नाप की अपनी शक्तियां और कमजोरियां होती हैं, अतः मुद्रास्फीति की चयनित नापों में अर्थव्यवस्था में मोटे तौर पर प्रभावी मांग और आपूर्ति की परस्पर क्रिया नियमित अंतरालों पर देखी जानी चाहिए। किंतु, हाल के वर्षों के दौरान मुद्रास्फीति की विभिन्न नापों की प्रवृत्ति ने नाप के कई वैचारिक मुद्दों को उठाया है। पहला, डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति और सीपीआइ मुद्रास्फीति के बीच अंतर बढ़ गया है। दूसरा, डब्ल्यूपीआइ का प्रतिनिधित्व कम हो गया है क्योंकि इसमें सेवा क्षेत्र, जो कि जीडीपी का एक बड़ा और बढ़ता हिस्सा है और जो 2008-09 में लगभग 65 प्रतिशत था, कवर नहीं होता। तीसरा, पुरानी आधार अवधि - डब्ल्यूपीआइ के लिए (1993-94), सीपीआइ-यूएनएमई (1984-1985), सीपीआइ-आरएल (1986-1987),

सीपीआइ-एएल (1986-1987) और सीपीआइ-आईडब्ल्यू (2001) - अर्थव्यवस्था में हुए तेज संरचनात्मक परिवर्तनों को कवर करने में विफल रही हैं²।

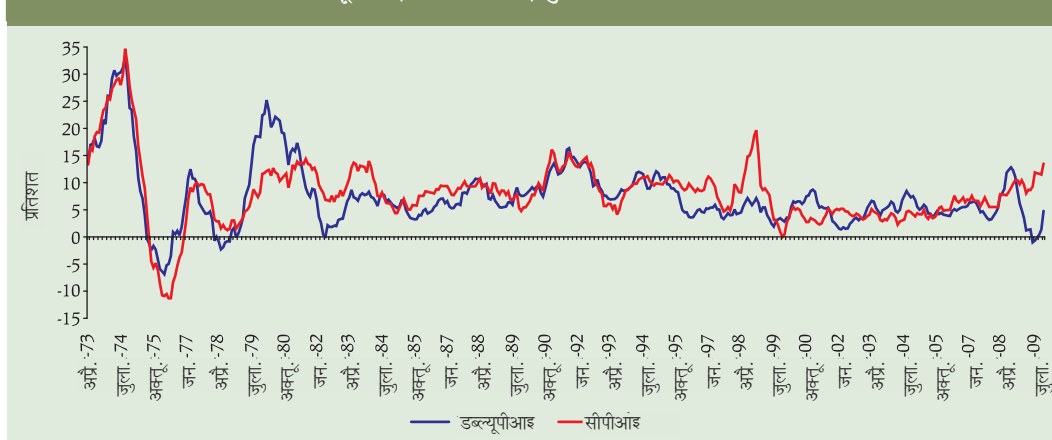
डब्ल्यूपीआइ और सीपीआई के बीच अंतर

8. डब्ल्यूपीआइ और सीपीआइ में अंतर क्यों होता है? उनकी भारांकन पद्धति में भिन्नता होती है। पहला, खाद्य भारांक सीपीआइ में अधिक होता है जिसका दायरा सीपीआइ-आईडब्ल्यू में 46 प्रतिशत से 69 प्रतिशत तक होता है जबकि डब्ल्यूपीआइ यह मात्र 27 प्रतिशत³ होता है। इसलिए, सीपीआइ खाद्य पदार्थों के मूल्यों में परिवर्तन के प्रति अधिक संवेदनशील होता है। दूसरा, ईंधन समूह का भारांक सीपीआइ (5.5 से 8.4 प्रतिशत) की तुलना में डब्ल्यूपीआइ (14.2 प्रतिशत) में बहुत अधिक है। इसके परिणाम के रूप में, अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल के मूल्यों में घट-बढ़ का असर सीपीआइ की तुलना में डब्ल्यूपीआइ पर ज्यादा होता है। तीसरा, सेवाएं

डब्ल्यूपीआइ के तहत कवर नहीं होती जबकि वे सीपीआइ में होती हैं, भले ही उनका स्तर अलग होता है। नतीजतन, सेवा मूल्य मुद्रास्फीति का प्रभाव सीपीआइ पर अधिक होता है।

9. चूंकि खुदरा बाजार थोक बाजार से वस्तुओं को प्राप्त करता है, यह उम्मीद है कि थोक बाजार में वस्तुओं के मूल्यों में परिवर्तन सामान्य रूप से खुदरा बाजार को प्रभावित करेगा। मासिक डब्ल्यूपीआइ और सीपीआइ का प्रयोग करते हुए की गई वेक्टर ऑटो रिग्रेशन (वीएआर) फ्रेमवर्क में ग्रेंगर कॉसलिट टेस्ट यह दर्शाती है कि प्रवृत्ति के स्तर पर सीपीआइ डब्ल्यूपीआइ से एक महीना पीछे रहती है। सीपीआइ और डब्ल्यूपीआइ के बीच दीर्घकालिक अंतर-संबंध भी होता है। इसलिए भारत में यदि यह देखी गई प्रवृत्ति जारी रहती है तो सीपीआइ और डब्ल्यूपीआइ दीर्घावधि में एक दूसरे से दूर नहीं जा सकते।

चार्ट 1: डब्ल्यूपीआइ और सीपीआइ मुद्रास्फीति के बीच दीर्घावधि संबंध



² यह उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय लेखा प्रणाली (एसएनए) 1993) आधार के नियमित अद्यतन के लिए राष्ट्रीय सांख्यिकी एजेंसियों को प्रभावित करती आ रही है। सामान्यतः, हर 5 साल में आधार का संशोधन प्रमुख विकसित और उभरते देशों में स्वीकार्य है।

³ विनिर्मित खाद्य पदार्थों सहित।

सारणी 1: दशकीय औसत मुद्रास्फीति				
दशक	डब्ल्यूपी आइ	सीपीआइ-आइडब्ल्यू	जीडीपी अपस्फीति	पीएफसीई अपस्फीति
1	2	3	4	5
1971-72 to 1980-81	10.3	8.3	8.8	8.4
1981-82 to 1990-91	7.1	9.0	8.7	8.3
1991-92 to 2000-01	7.8	8.7	8.1	8.5
2001-02 to 2008-09	5.2	5.3	4.6	4.4
दीर्घावधि प्रवृत्ति				
1971-72 to 2008-09	7.7	8.0	7.7	7.6

10. इसके अलावा, डब्ल्यूपीआइ, सीपीआइ-आइडब्ल्यू, जीडीपी अपस्फीति, और पीएफसीई अपस्फीति दीर्घावधि में एक समान पथ अपनाते हैं (सारणी 1)।

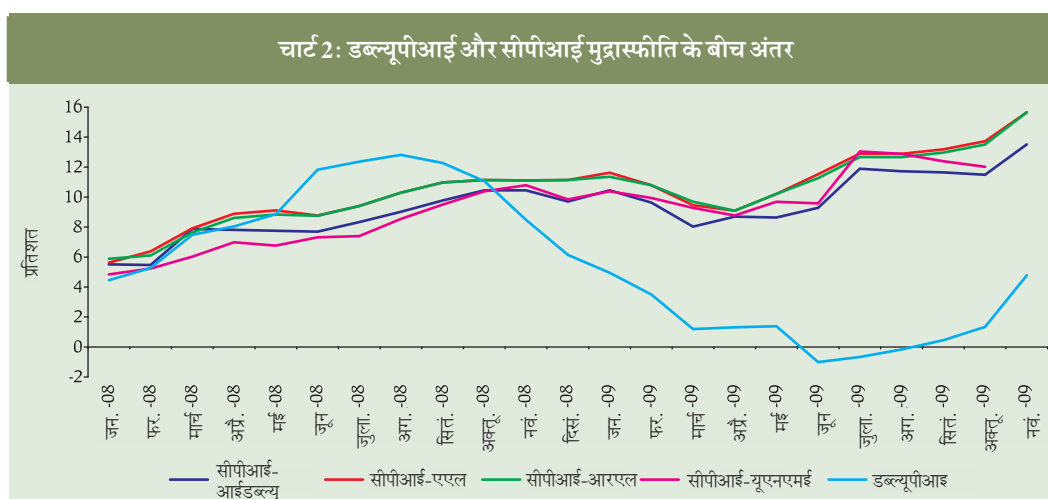
11. दीर्घकालिक कमी-बेशी के संबंध के बावजूद, डब्ल्यूपीआइ और सीपीआइ के बीच का अंतर 2008 के पूर्वार्ध से बढ़ रहा है (चार्ट 2)।

12. इसका कारण निम्नलिखित कारक हो सकते हैं। पहला, खनिजों और धातुओं के मूल्य मई-जून 2008 के दौरान तेजी से बढ़े और फिर तेजी से गिर गए जो वैश्विक रुझान को दर्शाते हैं। धातुएं और मिश्र धातुएं सीपीआइ समूह का एक हिस्सा नहीं होते, अतः, यह सीपीआइ और डब्ल्यूपीआइ के बीच अंतर को बढ़ाता है। दूसरा, कच्चे तेल के मूल्यों

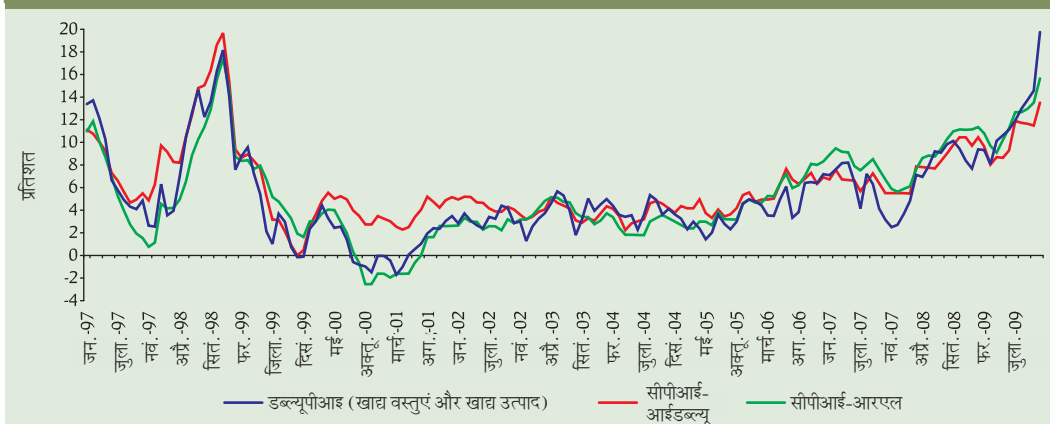
में धातुओं के रूप में एक इसी तरह की प्रवृत्ति थी जिसका सीपीआइ की तुलना में डब्ल्यूपीआइ पर अधिक प्रभाव था। तीसरा, सेवाओं - जैसे चिकित्सा देखभाल, शिक्षा, मनोरंजन, परिवहन और संचार और व्यक्तिगत देखभाल - के सीपीआइ-आईडब्ल्यू में मूल्य में 8 प्रतिशत से अधिक की महत्वपूर्ण मुद्रास्फीति हुई। किंतु, यह संकेत किया जा सकता है कि हाल की अवधि के दौरान समग्र संकेतों में अंतर के बावजूद सीपीआइ ने डब्ल्यूपीआइ के खाद्य घटक जैसी ही प्रवृत्ति दर्शाई (चार्ट 3)।

नई डब्ल्यूपीआइ श्रृंखला

13. डब्ल्यूपीआइ संशोधन कार्य दल (अध्यक्ष: प्रो अभिजीत सेन) की सिफारिश के अनुसरण में आधार वर्ष अद्यतन करके 2004-05 किया जा रहा है। नई श्रृंखला में विनिर्मित उत्पादों के प्रस्तावित समूह में अधिक वस्तुएं कवर होंगी और इसमें संगठित और असंगठित विनिर्माण क्षेत्रों की मंदां शामिल होंगी। जबकि इस कवरेज में सुधार होगा, वहीं मूल्य आंकड़ों का संग्रह नियमित आधार पर सुनिश्चित करने की चुनौती है ताकि गुणवत्ता को बनाए रखा जा सके। तथापि, संशोधित डब्ल्यूपीआइ समूह में सेवा मूल्य शामिल नहीं होंगे। एक विशेषज्ञ दल (अध्यक्ष: प्रो सी.पी. चंद्रशेखर)



चार्ट 3: डब्ल्यूपीआइ (खाद्य) और सीपीआइ पर आधारित मुद्रास्फीति दर की सह-घटबढ़



सेवा मूल्य सूचकांक के विकास की प्रक्रिया देख रहा है। डब्ल्यूपीआइ सूचकांक का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए, यह महत्वपूर्ण है सेवाओं को शामिल करने के लिए कवरेज का विस्तार किया जाए।

उत्पादक मूल्य सूचकांक

14. हमारे पास संशोधित डब्ल्यूपीआइ होने के बावजूद, हमारे पास उत्पादक मूल्य सूचकांक (पीपीआइ) नहीं होगा। पीपीआइ में बाजार के लिए तैयार प्राथमिक, मध्यवर्ती और तैयार माल और तैयार सेवाओं पर मूल्य परिवर्तन पर उत्पादक को होने वाली परेशानियां शामिल हैं। डब्ल्यूपीआइ और पीपीआइ के बीच कवरेज के अतिरिक्त प्राथमिक अंतर यह है कि डब्ल्यूपीआइ मार्क अप और करों सहित उत्पादन की औसत लागत में परिवर्तन को दर्शाता है, जबकि पीपीआइ करों को छोड़कर द्वार पर हुए माल के लनदेन के मूल्य में परिवर्तन पर ध्यान देता है। पीपीआइ का उद्देश्य वस्तुओं के उत्पादकों द्वारा प्राप्त मूल्य की नाप प्रदान करना है। पीपीआइ आमतौर पर औद्योगिक (विनिर्माण) क्षेत्र और सार्वजनिक उपयोगिता (बिजली, गैस और संचार) को कवर करता है। कुछ देशों में कृषि, खनन, परिवहन, और व्यापार सेवाओं को भी शामिल किया

जाता है। अधिकांश देशों ने 1970 और 1980 के दशक में डब्ल्यूपीआइ को पीपीआइ से प्रतिस्थापित किया। विश्लेषणात्मक प्रयोजनों के लिए, यह वांछनीय होगा कि भारत के लिए पीपीआइ के संकलन की प्रक्रिया शुरू की जाए।

नए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक

15. खुदरा स्तर पर, सीपीआइ जीवन स्थिति की लागत को प्रतिबिंबित करने के लिए है और उसकी चयनित वस्तुओं और सेवाओं के खुदरा मूल्यों के स्तर में परिवर्तन के आधार पर गणना जाती है जिस पर उपभोक्ता अपनी आय का बड़ा हिस्सा खर्च करते हैं। इसलिए, देश के लिए समग्र तौर पर एक व्यापक आधार की सीपीआइ, सेवाओं और विनिर्माण उत्पादों सहित, मौद्रिक नीति निर्माण के लिए बेहद प्रासंगिक है।

16. किंतु भारत में, सीपीआइ संबंधी आंकड़े संपूर्ण जनसंख्या के बजाय आबादी के विभिन्न वर्गों से संबंधित हैं। इस मुद्दे के समाधान के लिए रिजर्व बैंक ने पहल की थी और सीपीआइ (शहरी) और सीपीआइ (ग्रामीण) पर दृष्टिकोण पेपर बनाया था। इसके बाद, केन्द्रीय सांख्यिकी

संगठन (सीएसओ) ने सीपीआइ (शहरी) और सीपीआइ (ग्रामीण) पर आंकड़े तैयार करने का कार्य उसके पास ले लिया। नए सीपीआइ का सकलन हो जाने के बाद यह मूल्य सांख्यिकी की बड़ी आंकड़ा रिक्तता को भरने में एक लंबा रास्ता तय करेगा।

II. मुद्रास्फीति की गौण (व्युत्पन्न) नाप

17. पूरे देश के लिए मुद्रास्फीति की प्रातिनिधिक नाप और सीमित समय अंतराल के साथ उच्च आवृत्ति में मुद्रास्फीति के बारे में जानकारी की उपलब्धता मौद्रिक नीति के संचालन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। दीर्घकालिक संतुलन विश्लेषण पर आधारित अनेक प्रायोगिक कार्यों में पाया गया है कि मुद्रा आपूर्ति (एम₃) और डब्ल्यूपीआइ की श्रृंखला काफी सीमा तक आपस में जुड़े हैं और इस प्रकार यह साक्ष्य मिल जाती है कि डब्ल्यूपीआइ मौद्रिक नीति परिवर्तनों के प्रति अधिक अनुकूल होती है (रेड्डी, 1999)। मुद्रा आपूर्ति पर कार्य समूह की रिपोर्ट (1998) में डब्ल्यूपीआइ को भी मुद्रास्फीति की नाप के रूप में इस्तेमाल किया गया और यह पाया गया कि सांकेतिक मुद्रा मांग समीकरण ने लंबे समय तक चलने वाली मूल्य की लोच को एकता के करीब दिखाया। पारंपरिक डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति को हेडलाइन मुद्रास्फीति

के रूप में प्रयोग में लाने के बावजूद, हाल ही में कई सीमाएं उभरी हैं जो मुद्रास्फीति पर यथार्थवादी आकलन को डब्ल्यूपीआइ के आधार पर अनिवार्य रूप से जटिल बनाता है। इससे मुद्रास्फीति की अपेक्षाओं को स्थिर करने के उद्देश्य से मौद्रिक नीति को बेहतर रूप देने के लिए मुद्रास्फीति की प्रातिनिधिक नाप की जरूरत रेखांकित होती है। रिजर्व बैंक द्वारा मुद्रास्फीति का लक्ष्य पूरा किया जाना है, अतः किसी भी हित-संघर्ष से बचने के लिए मुद्रास्फीति पर प्राथमिक आंकड़े किसी अन्य सांख्यिकीय एजेंसी द्वारा तैयार किए जाने चाहिए।

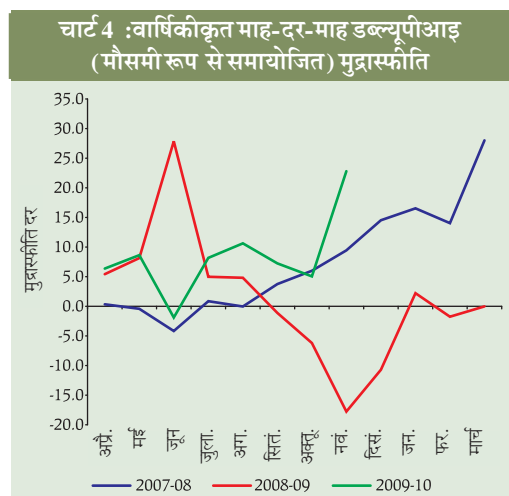
अमौसमीकृत मुद्रास्फीति रुझान

18. हेडलाइन मुद्रास्फीति के अलावा, नीति के प्रयोजन के लिए, केंद्रीय बैंक अंतर्निहित मुद्रास्फीति के दबावों को नापने के लिए मुद्रास्फीति की विभिन्न गौण (व्युत्पन्न) नापों पर ध्यान देते हैं। स्फीतिकारी गति का एक ऐसा सूचकांक वार्षिकीकृत माह-दर-माह मौसमी रूप से समायोजित मुद्रास्फीति। किंतु, भारत जैसी उभरते बाजार अर्थव्यवस्थाओं के लिए इस तरह के संकेतक के उपयोग की अपनी सीमाएं हैं, क्योंकि यह काफी अस्थिर हो सकता है (चार्ट 4)।

कोर मुद्रास्फीति

19. मुद्रास्फीति आंकड़ों के विश्लेषण का दूसरा रास्ता 'कोर मुद्रास्फीति को देखने,' का है जो आम तौर पर मुद्रास्फीति की एक चुना हुई नाप है जो कि खाद्य और ऊर्जा के मूल्यों जैसी अधिक अस्थिर श्रेणियों को शामिल नहीं करती। यहाँ मुख्य तर्क यह है कि केंद्रीय बैंक को अस्थायी विचलन के बजाय मूल्य स्तर के स्थायी घटक में घटबढ़ का प्रभावी रूप से सामना करना चाहिए।

20. कोर मुद्रास्फीति के कई चर हैं जो सांख्यिकीय तरीकों से मूल्य में परिवर्तन की अस्थिरता दूर करने की कोशिश करते हैं। इनमें मूल्य में परिवर्तन के मानक विचलन पर आधारित



सारणी 2: विभिन्न डब्ल्यूपीआइ आधारित कोर मुद्रास्फीति नापें⁴

माह	हेडलाइन	1.5एसडी	छंटी हुई	मंझली	पुनर्भार	प्रतिशत		खाद्य छोड़कर
						एफपीएलएल छोड़कर	एफपीएलएल और खाद्य छोड़कर	
1	2	3	4	5	6	7	8	9
जनवरी-08	4.5	3.0	3.1	1.6	4.2	4.6	5.3	4.9
फरवरी-08	5.3	3.4	3.5	2.1	4.5	5.4	5.9	5.6
मार्च-08	7.5	4.5	5.1	2.9	5.6	7.8	8.1	7.8
अप्रैल-08	8.0	5.3	5.1	3.0	6.2	8.3	9.0	8.5
मई-08	8.9	5.8	5.7	3.7	6.5	9.2	10.1	9.5
जून-08	11.8	8.4	7.4	6.5	7.9	10.6	11.8	12.9
जुलाई-08	12.4	8.5	8.0	6.3	7.9	11.0	12.3	13.6
अगस्त-08	12.8	8.8	8.5	6.7	8.0	11.6	12.8	13.9
सितंबर-08	12.3	9.2	8.1	6.6	7.8	11.1	12.0	13.2
अक्टूबर-08	11.1	10.1	8.0	7.0	7.5	10.3	10.3	11.3
नवंबर-08	8.5	7.6	7.1	6.3	6.7	9.0	8.7	8.1
दिसंबर-08	6.2	6.4	6.4	4.8	5.9	7.9	7.4	5.4
जनवरी-09	5.0	5.6	5.7	4.3	5.4	6.8	5.8	3.8
फरवरी-09	3.5	4.5	4.5	3.4	4.6	5.4	4.4	2.4
मार्च-09	1.2	2.1	2.8	1.1	3.4	3.2	2.1	0.0
अप्रैल-09	1.3	3.2	2.8	0.9	2.7	3.2	1.9	0.0
मई-09	1.4	1.9	2.4	0.8	2.8	3.4	2.2	0.1
जून-09	-1.0	-1.3	0.5	0.0	2.0	2.4	0.3	-3.1
जुलाई-09	-0.7	-1.0	0.4	0.0	2.6	2.2	-0.6	-3.2
अगस्त-09	-0.2	-0.9	0.5	0.0	2.9	2.4	-0.4	-2.7
सितंबर-09	0.5	-1.0	0.7	0.0	3.1	2.9	0.1	-2.1
अक्टूबर-09	1.3	-0.7	1.3	0.0	3.2	3.5	1.1	-0.9
नवंबर-09	4.8	1.1	2.6	0.0	4.3	6.3	3.6	2.5
वित्तीय वर्ष: 2008-09								
दायरा	11.6	8	5.7	5.9	4.6	8.4	10.7	13.9
माध्य	8.5	6.9	6.4	5.0	6.5	8.7	8.9	8.6
मानक विचलन ⁵	3.8	2.3 **	1.7 *	1.9 *	1.5 *	2.5 **	3.4	4.7
वित्तीय वर्ष: 2009-10								
दायरा	5.8	4.5	2.4	0.9	2.3	4.1	4.2	5.7
माध्य	0.9	0.2	1.4	0.2	3.0	3.3	1.0	-1.2
मानक विचलन ⁵	1.8	1.7	1.0 **	0.4 *	0.7 *	1.3	1.5	2.0

⁴ एसडी पद्धति: इस पद्धति में वे पण्य शामिल नहीं होते जिनमें प्रतिशत मूल्य परिवर्तन माध्य +/माध्य मूल्य परिवर्तन की तुलना में 1.5 मानक विचलन कम हो।

छंटा हुआ माध्य: छंटी हुई माध्य पद्धति प्रत्येक पण्य के मूल्य परिवर्तन का अनुमान लगाती है, उन्हें वृद्धिशील क्रम में व्यवस्थित करती है, श्रृंखला के संचयी भार की गणना करती है और जिन पण्यों का संचयी भार 8 प्रतिशत से कम हो या 92 प्रतिशत से अधिक हो उन्हें कम करती है।

मध्यम: यह पद्धति सभी पण्यों के मूल्य परिवर्तन की गणना करती है, उन्हें चढ़ते क्रम में व्यवस्थित करती है, नई श्रृंखला के संचयी भार की गणना करती है और पहले पण्य की मुद्रास्फीति लेती है जिसके लिए संचयी भार 50 प्रतिशत से अधिक या उसके समतुल्य होता है।

पुनर्भारिकन: इस पद्धति में, हम मूल्य परिवर्तन की गणना करते हैं, एक समय अंतराल पर डब्ल्यूपीआइ-सभी पण्य और साथ ही प्रत्येक पण्य के लिए मूल्य परिवर्तन के मानक विचलन की गणना करते हैं, किसी पण्य के डब्ल्यूपीआइ-सभी पण्य मानक विचलन और मानक विचलन के बीच अंतर के रूप में प्रत्येक पण्य के ऐतिहासिक मानक विचलन की गणना करते हैं। तब, हम ऐतिहासिक मानक विचलन के रूप में अंतिम भारांक की गणना करते हैं जो प्रारंभिक भार के गुणक में होता है।

⁵ * और ** यह संकेत करते हैं कि महत्व के क्रमशः 1 प्रतिशत और 5 प्रतिशत स्तर पर कोर मुद्रास्फीति मानक विचलन हेडलाइन मुद्रास्फीति के मानक विचलन से कम और बहुत अलग है।

पण्य छंटनी, छंटनी माध्य, मध्यम और अन्य फिल्टर आधारित सरलता तकनीक शामिल हैं। 2008-09 और 2009-10 के लिए डब्ल्यूपीआइ आधारित कोर मुद्रास्फीति की विभिन्न नापें सारणी 2 में प्रस्तुत की गई हैं। यह देखा जा सकता है कि कोर नापें महत्वपूर्ण माह-दर-माह अंतर दिखाते हैं हालांकि अस्थिरता हेडलाइन नाप की तुलना में कम रही है। चूंकि कोर मुद्रास्फीति हेडलाइन से व्युत्पन्न होती है, अतः यह मुद्रास्फीति की प्राथमिक नाप में कमजोरी को दर्शाती है। एक अच्छी मुद्रास्फीति नाप की पूर्व आवश्यकता यह है कि यह व्यापक रूप से कवरेज में होती है और आधार अवधि अक्सर अद्यतन किया जाता है जो अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव को दर्शाती है।

21. भारतीय संदर्भ में, सीपीआइ/डब्ल्यूपीआइ से खाद्य और ऊर्जा को छोड़ देने से कोर मुद्रास्फीति की व्युत्पत्ति में पण्य समूह का बहुत सा भाग छूट जाता है। अतः शेष वस्तुओं की मूल्य घट-बढ़ अंतर्निहित मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति की प्रतिनिधि नहीं हो सकती। हालांकि इन मूल्यों का समग्र सूचकांक पर काफी प्रभाव पड़ता है, वे अक्सर जल्दी से उलट जाते हैं। लेकिन अस्थिर मूल्यों का उलटना कभी कभी अल्पकालिक नहीं होता। इसलिए, समग्र मुद्रास्फीति नाप के बजाय कोर मुद्रास्फीति नाप को कब उपयोग में लाया जाए यह निर्धारित करना एक जटिल मुद्दा बना हुआ है।

III. भावी मार्ग

22. वैकल्पिक मुद्रास्फीति नापों के बीच अंतर भारत में मौद्रिक नीति के संचालन को जटिल बनाता है। तदनुसार, रिजर्व बैंक अन्य आर्थिक और वित्तीय संकेतकों के साथ मुद्रास्फीति की सभी नापों, समग्र और खंडित दोनों घटकों, को देखता है ताकि अंतर्निहित मुद्रास्फीति की स्थिति का आकलन किया जा सके। गवर्नर डॉ. सुब्बाराव द्वारा दिए गए संकेतानुसार 'रिजर्व बैंक विभिन्न मूल्य सूचकांकों के शोधन में लगातार लगा हुआ है और मुद्रास्फीति की नाप में और अधिक सुधार लाने के लिए सरकार को आवश्यक

सहायता प्रदान करता रहेगा'।

23. मौद्रिक नीति के निर्माण के संदर्भ में, यह महत्वपूर्ण है कि राष्ट्रीय स्तर पर मुद्रास्फीति की एक मजबूत प्राथमिक नाप हो। इस दिशा में, सीपीआइ (शहरी) और सीपीआइ (ग्रामीण) का संकलन देश के लिए प्रातिनिधिक सीपीआइ का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। इस बात की भी आवश्यकता है कि डब्ल्यूपीआइ की नई श्रृंखला को बढ़ाया जाए जिसमें उसका समग्र कवरेज सुधारने के लिए सेवा मूल्य सूचकांक होगा। इसके अलावा, यह वांछनीय होगा कि देश के लिए एक उत्पादक मूल्य सूचकांक (पीपीआइ) विकसित करने के लिए कदम उठाए जाएं। इसके अलावा, विभिन्न मूल्य सूचकांकों की प्रातिनिधिकता आधार वर्ष को बार-बार अद्यतन करके बढ़ाई जा सकती है ताकि अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन को दर्शा सके।

संदर्भ

बर्मन, आर.बी. और ए.के. नाग (2002): 'भारत में मुद्रास्फीति: राष्ट्रीय आय खातों और डाटा सिस्टम्स में विभिन्न मूल्य सूचकांकों के माध्यम से एक बहुआयामी दृष्टिकोण' एड , बी. एस. मिन्हास, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (2007): राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी - स्रोत और तरीके।

डी. सुब्बाराव (2009): 'उद्घाटन भाषण: तृतीय वार्षिक सांख्यिकी दिवस सम्मेलन' भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन, अगस्त।

दास ए., जे. जॉन और एस. सिंह (2009): ठकोर मुद्रास्फीति: मुद्दे और नापड, भारतीय आर्थिक समीक्षा (आगामी)।

मोहंती डी, डी पी रथ और एम रमैया (2000): 'भारत के लिए कोर मुद्रास्फीति की नाप' आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 35 (5)।

रेड्डी, वाइ. वी. (1999): भारत में मुद्रास्फीति: स्थिति और मुद्दे, आर्थिक और सामाजिक अध्ययन केंद्र, हैदराबाद में दिया गया भाषण।

भारतीय रिजर्व बैंक (1998): मुद्रा आपूर्ति पर कार्य दल की रिपोर्ट: संकलन की विश्लेषिकी और कार्यप्रणाली (अध्यक्ष: डॉ. वाइ वी रेड्डी)।

सामंत, जी.पी. (1999): 'भारत में कोर मुद्रास्फीति: नाप और नीतिगत परिप्रेक्ष्य', भारतीय रिजर्व बैंक सामयिक पेपर, 20 (1)।

श्रीनिवासन, टी.एन. (2008): 'मूल्य सूचकांक और मुद्रास्फीति दर', आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 43 (26)।